P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' द्वारा रचित 'गंगा से ग्लोमा तक' भारतीय संस्कृति की अनुपम काव्यकृति

सारांश

भाषा मनुष्य की अप्रतिम उपलब्धि है। वह भावों और विचारों की संवाहिका ही नहीं अपितु सांस्कृतिक–संपदा की संरक्षिका भी है। भाषा मनुष्य के लिए ईश्वर का सर्वोत्तम वरदान है। भाषा ज्ञान विहीन मनुष्य अपूर्ण है, अभिशप्त है। सृष्टि में जहाँ–जहाँ मानव समाज है, वहाँ–वहाँ भाषा समुपास्थित है। विधाता की सृष्टि वैविध्यपूर्ण है, प्रकृति का स्वरूप सर्वत्र भिन्न है और इसी क्रम में पृथ्वी पर समाज, भाषा आदि उपलब्धियाँ भी प्रायः भिन्न हैं। यह पृथ्वी अनेक भाषाओं के बोलने वालों, अनेक धर्मो के उपासकों और नाना प्रकार के मनुष्यों को धारण करने वाली है। इन विभिन्न इकाइयों के मध्य पारस्परिक सम्पर्क के लिए भाषा की उपादेयता असंदिग्ध है और समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का विशेष महत्त्व है। जिस प्रकार संसार में भारतवर्ष के अतीत में प्राचीनतम संस्कृति–समृद्ध और भविष्य में अपरिमित स्वर्णिम सम्भावनाओं से संयुक्त है, उसी प्रकार हिन्दी भी गौरवशाली अतीत और अनन्त भविष्य की संवाहिका है। अपरिमित विचार–सम्पदा, अकूत–साहित्य और अपार विस्तार के त्रिआयामों में सतत विकासरत हिन्दी विश्व–भाषा–परिवार में निश्चय ही अन्यतम है।[1]

ऋषिपाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता
कॉलेज,
कौल, कैथल, हरियाणा, भारत

मुख्य शब्द : प्रवासी हिन्दी साहित्य, 'गंगा से ग्लोमा तक', 'शरद आलोक'।

प्रस्तावना

प्रवासी हिन्दी साहित्य को लेकर सर्वप्रथम भारत के लोगों के प्रवास के चिंतन के बारे में ध्यान जाता है। प्रवास का अर्थ होता है कि अपने स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाना। डॉ. कृष्ण कुमार के अनुसार – प्रवास शब्द 'वस्' धातु में प्र उपसर्ग लगने से बना है। 'वस्' धातु का प्रयोग रखने के लिए होता है। वामन शिवराम आप्टे के अनुसार प्रवास शब्द का अर्थ विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना है।[2] अतः हम यह भी कह सकते हैं कि अपने घर, शहर को त्याग कर किसी अलग शहर या राज्य में चले जाना भी प्रवास कहा जायेगा। लेकिन इस राष्ट्रीय प्रवास के साथ–साथ 19वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास की स्थिति भी पैदा हो गई। 19वीं शताब्दी से पहले भारत के लोग स्वेच्छा से विदेशों में व्यापार करने या स्वदेश प्रेम से ओत–प्रोत होकर स्वाधीनता संग्राम को बढ़ाने के लिए संसार के अनेकों देशों में गए थे। कुछ भारतीय लोग शिक्षा प्राप्ति के लिए भी विदेशों में गए थे। लेकिन 19वीं शताब्दी के बाद गिरमिटिया मजदूरों के रूप में भारत के लोगों का प्रवास पहले के प्रवासियों से अलग था। इस प्रवास के सन्दर्भ में डॉ. कमलकिशोर गोयनका लिखते हैं, ''परन्तु भारत में अंग्रेजों के शासन की स्थापना के बाद दृश्य में परिवर्तन हुआ। भारत में अंग्रेज, फ्रैंच, डच आदि शासक अपने–अपने उपनिवेशों में हजारों भारतीय मजदूरों को छल–कपट से गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले गए और इस प्रकार मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनीडाड आदि देशों में हजारों भारतीय पहुँचा दिए गए और इन भारतीयों ने तुलसीदास की 'रामचरितमानस', 'हनुमान चालीसा' जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक ग्रन्थों से अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा करते हुए इन देशों का अपने श्रम से कायाकल्प किया। ये भारतीय मजदूर जो 'इण्डियन इंडेन्यन लेबर सिस्टम' अर्थात शर्तबन्दी प्रथा के अन्तर्गत गए थे, जिनकी मातृभाषा भोजपुरी थी और अवधी में रची गई 'रामचरितमानस' श्वेत मालिकों की क्रूरता, अत्याचार और शोषण के बीच उनकी जीवन शक्ति थी।[3] भारतीय प्रवासियों ने अपने–अपने प्रवासी देशों में अपने संघर्ष एवं कर्मठता से अपना एक अलग संसार बसाया। इस प्रकार इन लोगों ने जो साहित्य घर से बाहर रहकर लिखा, वह प्रवासी साहित्य कहलाया। ''अतः

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रवासी हिन्दी लेखन से हमारा तात्पर्य उस लेखन से होना चाहिए, जिसकी रचना घर से दूर हुई हो चाहे वह विदेश में हो या अपने ही देश में किन्तु घर से दूर।''[4]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' द्वारा रचित 'गंगा से ग्लोमा तक' भारतीय संस्कृति की अनुपम काव्यकृति का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

नार्वे की धरती पर प्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के साथ–साथ हिन्दी भाषा और साहित्य से विदेशी धरती को भी आप्यायित किया है। 'शरद आलोक' जी विलक्षण प्रतिभा के महान साहित्यकार हैं। साहित्य सृजन के क्षेत्र में उन्होंने अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उनके समृद्ध व्यक्तित्व के बारे में लिखना या बोलना मेरे जैसे छोटे से कलमकार के लिए सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। साहित्यिक क्षेत्र में अभिरुचि रखने वाले सभी हिन्दी प्रेमियों के लिए प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' का नाम अनजाना नहीं है। वे उच्चकोटि के ख्याति प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी साहित्यकार हैं। विगत लगभग 35 वर्षों से विदेशों में हिन्दी–भाषा, साहित्य व भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए शुक्ल जी अथक प्रयासों से समर्पित हैं। लम्बे समय से विदेशी धरती पर रहने के बाद भी उनके मन में भारत, भारतीयता, हिन्दी व भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव है। 'शरद आलोक' जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। प्रवासी साहित्य के रूप में उन्होंने गद्य व पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है। सौम्य व्यक्तित्व, सरल स्वभाव, प्रसन्न मुख, मिलनसार आदि गुण उनके व्यक्तित्व में समाहित हैं। उनके मन में भारत देश के व्यापक एवं विस्तृत विशेष भूभाग या किसी प्रान्त और क्षेत्र विशेष को लेकर कोई आग्रह–अनुग्रह नहीं है, बल्कि वे समस्त भारत देश से प्रेम करते हैं।

प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' भारत के मूल निवासी हैं, इसलिए उनके व्यक्तित्व में भारतीय सभ्यता की झलक स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होती है। सुरेशचन्द्र शुक्ल का जन्म 10 फरवरी, सन् 1954 को भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुआ। उनकी ख्याति 'शरद आलोक' के रूप में साहित्य संसार में आलोकित है। वर्तमान में शुक्ल जी नार्वे की राजधानी ओस्लो में रहते हैं। उन्होंने भारत में लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् 1979 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात इन्होंने ओस्लो (नार्वे) में स्थित विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। पत्रकारिता, नार्वेजीय भाषा आदि में शिक्षा प्राप्त करने के बाद यूरोपीय देशों में साहित्य और पत्रकारिता स्कैन्डिनेवियन भाषा की शिक्षा लेने वाले शायद आप पहले भारतीय बने। 'शरद आलोक' जी बहुआयामी काव्य प्रतिभा के स्वामी हैं, वे कवि, पत्रकार और लेखक के रूप में विदेशी धरती पर प्रवासी भारतीय साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। श्री 'शरद आलोक' जी को ओस्लो में 'स्पाइल' नाम की पत्रिका के सम्पादक का गौरव भी प्राप्त है। आप सदैव मिलनसार, आत्मीय, हँसमुख प्रकृति से लोगों के मन में अपनी छाप छोड़ देते हैं। आपके व्यक्तित्व में सहजता, सरलता,सादगी, मौलिकता जैसे दुर्लभ व श्रेष्ठ मानवीय गुण आपकी ख्याति को चार चाँद लगाते हैं। 'शरद आलोक' जी ओस्लो से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र 'गुरन्द्दालेन' के उप–सम्पादक का गौरव भी प्राप्त करते हैं। आपने अपने सद् प्रयासों से नार्वे में सोशलिस्ट लेफ्ट पार्टी में हिन्दी, पंजाबी और तमिल भाषा को जर्मन, फ्रेंच और स्पेनिश की भांति स्कूलों में पढ़ाये जाने को लेकर एक प्रस्ताव पारित कराया।

नार्वे में विख्यात प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' स्वयं को हिन्दी के प्रति समर्पित मानते हैं। आप महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानते हैं। आपके सात काव्य संग्रह हिन्दी में और दो नार्वेजीय में प्रकाशित हो चुके हैं। दो कहानी संग्रह हिन्दी में और एक उर्दू में प्रकाशित हो चुका है। आपके दो नाटक लिखे जा चुके हैं। आपके चर्चित कविता संग्रहों में – 'रजनी', 'नंगे पांवों का सुख' और 'नीड़ में फंसे पंख' और कहानी संग्रह में 'अर्धरात्रि का सूरज' है। अनुवाद में चर्चित कृति 'गुड़िया का घर' है। आपने नार्वेजीय साहित्य का प्रचुर मात्रा में हिन्दी में अनुवाद किया है। हेनरिक इबसेन के नाटकों 'गुड़िया का घर', 'मुर्गाबी' और क्नुत हामसुन के उपन्यास 'भूख' तथा नार्वे और डेनमार्क के एच.सी. अन्दर्सन की लोककथाओं का अनुवाद किया है। अनेक संकलनों का सम्पादन और अनेक अन्थोलॉजियों में आपकी रचनाएँ संगृहीत हैं। आप की कृतियों पर शोध हो रहे हैं। आपकी कथाओं पर तीन टेली फिल्में बन चुकी हैं। नार्वेजीय लेखक यूनियन, हिन्दी अकादमी दिल्ली और चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस और छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन, यू.के., अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति और विश्व हिन्दी समिति यू.एस.ए., अहिंसम भारतीय मैनचेस्टर और यू.के. हिन्दी समिति, लन्दन ने आपको पुरस्कृत किया है। इतना ही नहीं आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 14 सितम्बर, 2015 को लखनऊ में विदेश हिन्दी प्रचार सम्मान दिया गया।

नार्वे में गत 35 वर्षों से नार्वे की हिन्दी पत्रिकाओं परिचय, वैश्विका और अब 28 वर्षों से स्पाइल का सम्पादन करने वाले सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने विदेशों में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य को एक नया आयाम दिया है। आप राष्ट्रीय समाचार पत्र देशबन्धु के यूरोप सम्पादक हैं। आपके द्वारा लिखा नाटक 'अन्तर्मन के रास्ते' फिल्माचार्य आनन्द शर्मा के निर्देशन में खेला गया था। 'शरद आलोक' जी देश विदेश में हिन्दी पत्रकारिता, साहित्य और अपने साहित्य में व्याख्यान भी विद्वतापूर्ण देते हैं तथा मानवतावाद और पर्यावरण में साहित्य की भूमिका को अहम मानते हैं। मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी से इनके काव्य संग्रह 'गंगा से ग्लोमा तक' को पुरस्कृत किया गया है। 2015 में ओस्लो, नार्वे में ओस्लो का 'बियर के संस्कृति पुरस्कार' इनकी कविता में इंटीग्रेशन के लिए दिया गया है।[5]

प्रवासी साहित्यकार श्री 'शरद आलोक' जी विदेशी धरती पर भारतीय जीवन मूल्यों, हिन्दी व भारतीय संस्कृति के प्रचारक, प्रसारक एवं संरक्षक के रूप में जाने

जाते हैं। 'गंगा से ग्लोमा तक' 'शरद आलोक' जी का सन् 2010 के अन्त में प्रकाशित काव्य संग्रह है। काव्य–संवेदना की दृष्टि से 'गंगा से ग्लोमा तक' की रचनाएँ तीन उपखण्डों में समाहित हैं – 'गंगा', 'ग्लोमा' और 'संगम।' इस काव्य–संग्रह में भारतीय संस्कृति को प्रमुख रूप से वर्णित किया गया है। स्वयं साहित्यकार 'शरद आलोक' ने 'गंगा से ग्लोमा तक' काव्यकृति के 'आमुख' में लिखा है, ''मेरा उद्देश्य दो देशों मातृभूमि 'भारत' और प्रवासी देश नार्वे के मध्य सांस्कृतिक सेतु का जो कार्य मैं विगत 30 वर्षों से कर रहा हूँ, उसे शब्द देना है। x x x यदि अपने को श्रीकृष्ण और श्री राम की सन्तान मानूँ तो भारत मेरे लिए देवकी माँ और नार्वे मेरी यशोदा माँ है।[6] 'शरद आलोक' जी ने 'गंगा से ग्लोमा तक' के कलेवर में कुल 54 कविताएँ संजोयी हैं। इन कविताओं में प्रमुख रूप से पर्यावरण, हिन्दी–प्रेम, देश–प्रेम, प्रकृति, आतंकवाद, अन्तर्राष्ट्रीय शांति, गरीबी, सांस्कृतिक प्रदूषण, जातीय व साम्प्रदायिक वैमनस्य, सद्भाव, वृद्धों के प्रति सम्मान, बालकों के प्रति चिन्ता, साहित्यकार का दायित्व, कार्य की महत्ता, मूल्यहीनता आदि बिन्दुओं को अपनी संवेदना का आधार बनाते हुए एक समग्र विश्व परिवार अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना की प्रतिष्ठा स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। 'शरद आलोक' जी हमेशा चाहते हैं कि समस्त धरती पर एक ऐसे विश्व परिवार का निर्माण हो जहाँ एक दूसरे से प्रेम हो, सद्भाव हो, लेकिन मतभेद न हो, एक ऐसा वातावरण कि जहाँ समस्त सृष्टि सत्य और अहिंसा, प्यार और स्वतन्त्रता की मूल नींव पर खड़ी हो। कवि उच्च आदर्श एवं उच्च विचारों को स्वीकृति देते हैं – प्रकाश की हर किरण, चमकदार सागर है, और विचार विचारों का सागर है, प्रकाश को दर्पण चाहिये, और विचार को मनुष्य।[7]

'शरद आलोक' जी ने हमेशा भारतीय संस्कृति की चन्दनी सुगन्ध से विदेशी सभ्यता को सुवासित किया है। आजीवन उन्होंने अविरल, अबाध गति से साहित्य सर्जना की है। सहृदयता, सहिष्णुता, उदारता, तटस्थता, वैचारिकता, सादगी एवं पीयूषमयी वाणी उनके व्यक्तित्व का शृंगार बनी है। उन्होंने विदेश में रहकर भी हमेशा भारत, भारतीयता व भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी समर्पित भावना से रचनाएँ लिखी हैं। भारत से प्रेम उनकी 'प्रवासी पंछी' रचना में स्पष्ट दिखाई पड़ता है – 'दूर रहकर भी अपना देश, सांस में जीवन का मधु घोल। रचे मेंहदी से स्वप्न सजीव, पंख बिन कैसे उड़े खगोल।। जहाँ सृजनता का मुख चूम, भाग्य पूजती जिसके द्वार। वही सुन्दर है मेरा देश, वही शक्ति रचना संसार।।[8]

महान प्रवासी साहित्यकार 'शरद आलोक' जी ने राष्ट्र प्रेम, हिन्दी प्रेम, मानवता–प्रेम, अनेक देशों की संस्कृति से प्रेम आदि को अपनी कविता में अभिव्यक्ति दी है। उनका साहित्य संसार व्यापक है। वे सबका मंगल चाहते हैं। वे नैतिक मूल्यों का समर्थन करते हुए जीवन मूल्यों पर जोर देते हैं। वे ऐसे विश्व के निर्माण की कल्पना करते हैं जहाँ मानवता में परस्पर प्रेम हो, सद्भावना हो, शान्ति हो, त्याग हो, लोगों के मन में ज्ञान रूपी प्रकाश हो, भेदभाव लेशमात्र भी न हो, ऊँच–नीच का भेद भी न हो। सभी के मनों में अज्ञान रूपी अन्धकार मिट जाये व ज्ञान रूपी प्रकाश व्याप्त हो जाए। 'ज्ञान के दीप जलाते चलो' कविता में 'शरद आलोक' जी लिखते हैं – 'पग–पग में बिछे काँटे जहाँ, रास्ते से उनको हटाते चलो। छाया अंधेरा देखो जहाँ, ज्ञान के दीपक जलाते चलो।। सबसे बड़ा मानव धर्म है, जीवन में सबसे बड़ा कर्म है, न कोई छोटा बड़ा है यहाँ, सभी बराबर यही धर्म है।।'[9]

नार्वे के प्रसिद्ध कवि 'शरद आलोक' जी का हृदय मानव के प्रति संवेदनाओं, उच्च मानवीय मूल्यों व सामाजिक आदर्शों से समाहित है। वे चाहते हैं कि सुन्दर, स्वस्थ और समग्र मानव प्रेम से युक्त विश्व में कल्याणकारी भावनाएँ व्याप्त हों। वे भारत व नार्वे दोनों देशों से समान प्रेम करते हैं। दोनों देशों की संस्कृति, भाषा व साहित्य के लिए वे समर्पित हैं। उनका आशावादी दृष्टिकोण 'अंधकार में दीप अनेकों' व 'शिक्षा के दीप जलाओ' में स्पष्ट दिखाई देता है। वे नितान्त संवेदनशील प्रकृति के हैं, इसलिए उनका आन्तरिक व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। बुद्धिवाद के युग में भी वे भावुकता से काम लेते हैं – 'राम राज्य आया ही समझो, मिशन, दृष्टि कर्मठता होगी, मन में सृजन पिपासा होगी, बन कर दीप तेज फैलाना, मन मन्दिर में दीप जलाना।'[10]

'शरद आलोक' जी सदैव मानव प्रेम के लिए लोगों में चेतना जागृत करने का अनूठा प्रयास करते हैं। वे भारत में आतंकवाद की समस्या को भली प्रकार से समझते हैं। भारत ही नहीं अपितु सारा विश्व आतंकवाद की चपेट में है। आतंकवाद विश्व में भयंकर बीमारी बन गया है। वे चाहते हैं कि आतंकवाद का समूल विनाश हो। मानवता के लिए यह अभिशाप है। आतंकवाद के कारण विश्व में शान्ति, प्रेम, भाईचारा एवं सहानुभूति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वे इसे सभी देशों के लिए घातक मानते हैं। वे कई कविताओं जैसे 'युग पुरुष गांधी से', 'समय की शिला पर', 'उठाओ हाथ में मशाल', 'शान्ति के दीप जलाओ बंधु!' आदि में आतंकवाद के खात्मे के लिए लोगों से आह्वान करते हैं – 'गांधी के देश में हिंसा का तांडव बन्द करो, अपनी माता के दूध की खातिर, आतंकी हमला खत्म करो। जिनके घरों में न जले हों चूल्हे, उनको दो रोटी और प्रेम, घायल, पीड़ित हो जहाँ–जहाँ, उन्हें लगाओ मरहम बन्धु! अपने कमद बढ़ाओ, बन्धु! शान्ति के दीप जलाओ, बन्धु!'[11]

कवि द्वारा 'गंगा से ग्लोमा तक' की सभी कविताओं में भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। ये सभी कविताएँ वैश्विक क्रान्ति की द्योतक हैं। 'शरद आलोक' जी ने उन सभी बिन्दुओं को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति दी है, जिनके कारण आदर्श परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व–संरचना की भावना धूमिल होती जा रही है। 'सड़क पर पर्यावरण देवी', 'लखनऊ में सर्दी है' आदि कविताओं में 'शरद आलोक' ने पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ताओं को व्यक्त किया है। आज समस्त विश्व में पर्यावरण दूषित हो रहा है, जिस कारण से मानव पर कई तरह के खतरों के बादल मंडरा रहे हैं। अनेक प्रकार के प्रदूषणों ने मानव–जीवन को नरक बना दिया है। जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, शोर–प्रदूषण व अपसंस्कृति का प्रदूषण विश्व में

मानवजाति के लिए खतरा बन गया है। 'शरद आलोक' जी भारत देश के प्रति विशेष स्नेह रखते हैं। 'देश–भक्ति' उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है। देश–प्रेम की उनके मन में अतिशय–प्रेम–भावना और श्रद्धा का चित्रण उनकी कविता 'अंचल से अन्तरिक्ष तक हिन्दी', 'स्वदेश–प्रेम', 'जीवन में पुण्य कमायें', 'उज्जैन की प्रभा', 'लखनऊ की चाशनी कहाँ गयी', 'भूला–बिसरा अमृतसर' आदि में अभिव्यक्ति हुई है। 'स्वदेश प्रेम' शीर्षक कविता में देश–प्रेम की भावना स्पष्ट दिखाई पड़ती है – 'रोम–रोम में बसता है, अनुपम यह देश हमारा। जिसकी मधुमय यादों में, पुलकित तन–मन हो सारा।। जब मातृभूमि जाता हूँ, है नव स्फूर्ति भर जाती। प्रेरक स्रोत माँ मेरी, संग–संग मेरे आती।।'[12] और – 'अपने देश में सब कुछ रखा, ज्ञान और विज्ञान। लौटो अपना देश बुलाता, छोड़ो प्रवास का ध्यान।।'[13]

'गंगा से ग्लोमा तक' में कवि ने राजनीति में गांधी जी की विचारधारा का जोरदार समर्थन किया। वर्तमान परिवेश में नेता स्वार्थपरता व भ्रष्ट होने के कारण गन्दी राजनीति करते हैं। देश का धन लूटते हैं व अपने लिए धन कमाने की फिराक में लगे रहते हैं। कवि ने राजनीति में अवसरवादिता, जातिवाद, भाई–भतीजावाद व अनेक प्रकार की विद्रूपताओं से ग्रस्त गन्दी राजनीति का विरोध किया है। वे मानते हैं कि वर्तमान राजनीतिक परिवेश में भ्रष्टाचार, शोषण व क्षेत्रवाद आदि समस्याओं से ग्रस्त राजनीति में विकार बढ़ गये हैं। उन्होंने अपनी कई कविताओं जैसे 'राजनीति और लेखनी', 'भेद भाव मिटाओ बन्धु!', 'अमेरिका खुली हवा में' आदि में राजनीतिक विषमताओं व अनियमितताओं को लेकर अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से राजनीतिक प्रदूषण पर चोट की है। उनकी 'राजनीति और लेखनी' कविता में वे कहते हैं – 'राजनीति तो समझ आती नहीं, प्रेम के गीत वह गाती नहीं, राजनीति व्यक्त करने के लिए, लेखनी–सा अस्त्र दूजा है नहीं।'[14] और 'गांधी सी मशाल जलाओ, राजनीति से सेवा भाव से, पहले हृदय में दीप जलाओ।।'[15]

नार्वे के महान प्रवासी साहित्यकार 'शरद आलोक' जी चाहते हैं कि विश्व में लोगों के मन में परोपकार एवं कल्याणकारी भावना व्याप्त हो। वे धरती पर सभी जन समुदाय को खुश देखना चाहते हैं। दूसरों को दुःखी देखकर उनके मन में पीड़ा जाग जाती है। वे जीवन में मानवीय मूल्यों के पक्षधर हैं। उनकी सोच है कि प्रत्येक आदमी के जीवन में समता, समानता, न्याय, सह–अस्तित्व व स्वतन्त्रता जैसे भाव विद्यमान हों। 'शरद आलोक' जी की 'आकलन' कविता में इसी प्रकार के विचार प्रकट हुए हैं – 'समानता नहीं हो, वहाँ न्याय नहीं है। मानवता जहाँ नहीं, वह धर्म नहीं है।'[16] 'गंगा से ग्लोमा तक' में कवि ने समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, अशिक्षा, बाल–विवाह आदि समस्याओं के विरुद्ध अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति दी है। नारी के प्रति कवि के मन में असीम सम्मान का भाव है। वे कहते हैं – 'नारी को धन समझकर युवतियों को पीटते हैं। दहेजों के बहाने मानव को लूटते हैं। जिसको पिलाया दूध वह नाग बन गये हैं। कोख अपनी माँ की बदनाम कर रहे हैं।'[17]

कवि द्वारा 'गंगा से ग्लोमा तक' काव्य में मनमोहिनी प्रकृति को अप्रतिम रूप में अभिव्यक्ति मिली है। प्रवासी कवि 'शरद आलोक' जी विदेश में रहकर भारत के अनुकूल और प्रतिकूल प्राकृतिक परिवेश का समान रूप में चित्रांकन करते हैं। भारत में छः ऋतुओं की विविधता प्राकृतिक सौन्दर्य की पहचान है। प्रकृति के पुजारी कवि ने प्रकृति सौन्दर्य का पान कर दुर्लभ आनन्दानुभूति की है। 'आकुल वसंत' में वे लिखते हैं– 'महुआम हके, फूल उठे आमों के बौर, खिलते हैं कचनार और कनेर, पीले–पीले सरसों के फूलों ने, खेतों के पीले किए हाथ बंधु।'[18] वसंत को लेकर कवि लिखते हैं – 'ओ वसंत तुम्हारा नहीं है जवाब, बर्फीला मौसम, बिहँसते गुलाब।'[19] इसी प्रकार – 'बरखा की लेकर बारात, डोली उठाए मेधा कहार, बदरा गरजे, बिजुरी चमके, रिमझिम–रिमझिम फुहार, दादुर लगाए गुहार।'[20]

'शरदोत्सव' कविता में प्रकृति सुन्दरी के प्रतिपल सुन्दर से सुंदरतर होते रूप को कवि आँखों में भर लेना चाहते हैं। वे लिखते हैं – 'चहुँ ओर बर्फबारी होती, तुहिन कणों से भर जाता है, घाटी, पर्वत मालाओं पर, चहुँ ओर उजाला भर जाता है।'[21] 'शरद आलोक' जी की कविताओं में प्रकृति से सीधा तारतम्य एव संपृक्ति दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति के विविध रूपों में अनेक मनोरम चित्र उनकी कविताओं में दिखाई पड़ते हैं। ऐसा लगता है कि मानो प्रकृति अपने अनेक रूपों में उनके काव्य की प्रेरिका बनकर आयी है। कवि ने प्रकृति के आलम्बन एवं उद्दीपन दोनों रूपों में कविताओं में स्थान दिया है। प्रकृति के रौद्र अथवा वीभत्स रूप को 'शरद आलोक' ने अपनी कविताओं में वर्णित नहीं किया।

प्रवासी साहित्यकार 'शरद आलोक' जी की प्रत्येक कविता गुण विशिष्टता से परिपूर्ण है। उनके मन में स्वदेश प्रेम, राष्ट्रभक्ति तथा भारतीय संस्कृति की संवेदनाएँ कविता के माध्यम से अभिव्यक्त होती हैं। कवि ने समकालीन परिवेश को भी यथार्थ अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविताओं में आधुनिक युगबोध की अनेक भाव–भंगिमाएँ समाहित हैं। 'सड़क पर विचरते देवदूत' कविता में कवि आज के समाज, जीवन व परिवेश का यथार्थ चित्रण करते हुए कहते हैं, 'खींचते ठेलों के पहियों में, चीथड़ों से बंधी धुरी, बादलों के साथ–साथ दौड़ते, विश्वास के लिए गगरी, खुले मुख, जिह्वा कर रही नर्तन, मनुष्य समझता जीवन रेगिस्तान, मीन–सा श्वांस–श्वांस चल रहा, दौड़ते बच्चों की कतार से, जन्म ले रहा मनुष्य और भविष्य।'[22] 'गंगा से ग्लोमा तक' में कवि ने अनेक कविताओं में मानवता की अभिव्यक्ति पर जोर दिया है। अपने देश भारत व विदेशों में कवि ने अनेक लोगों की पीड़ा, दर्द को बखूबी नजदीक से देखा व जाना है। कवि की यह संवेदनशीलता और मानवीयता इनकी कविता का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। वे गरीब लोगों के जीवन का मार्मिक चित्रण अपनी कविताओं में करते हैं। 'यह वह सूरज नहीं' कविता में कवि ने वर्तमान जीवन शैली के यथार्थ को प्रकट किया है – 'ये अनगिनत सूरज, (बालक बालिकाएँ) जो निर्धन देशों में, नंगे पांवों सड़कों की गर्म देह पर, भीषण वर्षा में टूटी छतों के नीचे, जाड़े में ठिठुरते हुए,

हँसते गाते, रोते, चिल्लाते, दिन में समाज को, उष्मा से बचाते हुए, रात का पहरा देते हैं।'[23]

प्रवासी कवि 'शरद आलोक' जी ने आजीवन अथक प्रयास व कर्मठता के साथ जीवन यात्रा को आगे बढ़ाया है। कवि की प्रबल इच्छा है कि वर्तमान में युवा वर्ग समाज व मानवता के उत्थान के लिए आगे आये। विगत दिनों की विषमताओं, विद्रूपताओं, कुरीतियों से विमुख होकर मानव सामाजिक मूल्यों के संवर्धन के लिए युवा संकल्प लें। 'नयी दस्तक' कविता में कवि चाहते हैं कि समाज में परिवर्तन के लिए सभी लोग एकत्रित होकर आगे बढ़ें। यह कविता एक क्रान्तिकारी कविता के रूप में जानी जाती है। इस कविता के माध्यम से कवि ने लोगों को शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक जुट होकर खड़े हो जाने और युग के बदलाव के लिए आह्वान किया है – 'नया विद्रोही, बजा, उठा बिगुल, पुनः धर्म–पथ पर, एक नयी आजादी का, शंखनाद आज, मौन बैठे रचनाकार, दल से दल दल में? कानून जब ढीला हो, शासन अस्वस्थ बदल दो, चुनो ईमानदार नेतृत्व।'[24]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'गंगा से ग्लोमा तक' की सभी कविताओं में प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' द्वारा भारतीय संस्कृति के अनेक बिन्दुओं को उजागर किया है। निश्चित रूप से इन सभी कविताओं में भारतीय संस्कृति का वैश्विक रूप दृष्टिगोचर होता है। इसमें तनिक भी शंका नहीं कि 'शरद आलोक' जी प्रवासी साहित्यकार के रूप में अपनी कविताओं के माध्यम से मानव मन को धैर्य और विश्वास की डोर से बांधने में सफल नहीं हुए हैं। निस्सन्देह उनकी कविताओं में एक सुन्दर एवं स्वस्थ विश्व की संरचना का सन्देश दिखाई पड़ता है। 'गंगा से ग्लोमा तक' में कवि ने उन सभी विषयों को भी अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति दी है, जिनके कारण आदर्श परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व–संरचना की भावना धूमिल होती जा रही है। 'शरद आलोक' मानवीय मूल्यों के सशक्त रचनाकार हैं। उनकी कविताओं में आद्योपांत भारतीय संस्कृति की सुगन्ध की सुरसरि लहराती दृष्टिगोचर होती है। वर्तमान वैश्विक युग में इनकी राष्ट्रीय चेतना को अंतर्राष्ट्रीय और वसुधैव कुटुम्बकम् का गहरा रंग मिल गया है। अतः 'गंगा से ग्लोमा तक' के माध्यम से कवि द्वारा भारतीय संस्कृति का संदेश पूरे विश्व में पहुंचाया गया है। इस काव्यकृति की सभी कविताएँ भावपक्षीय दृष्टि से बहुआयामी, सफल तथा प्रभावी बनी हैं। कवि ने अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए आम बोलचाल की हिन्दी भाषा का चयन किया है। इस कृति में भाषा एवं शिल्पगत सरलता, सहजता, प्रभावविष्णुता, सरसता, ओज, प्रसाद, माधुर्य, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता और अलंकारिकता के गुण विद्यमान हैं।

निसन्देह 'शरद आलोक' यथानाम तथा गुण को चरितार्थ करने वाले महान रचनाकार हैं। उनकी वैचारिक स्पष्टता और सूक्ष्म दृष्टि का परिणाम है कि वे साहित्य और ललित कलाओं का समन्वय अपने कार्यक्षेत्र में बहुत ही सफलता के साथ कर सके। उन्होंने अपनी ऊर्जा व स्फूर्ति से अपने लक्ष्य और ध्येय को प्राप्त करके अपनी सशक्त पहचान बनाई है। वे वर्तमान में भी लगातार काव्य सृजन में सक्रिय रूप से लिप्त हैं। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'शरद आलोक' जी भारतीय संस्कृति की पताका को पाश्चात्य जगत में लहराते हुए हम भारतवासियों के प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। मैं इस महान प्रवासी साहित्यकार को नमन करता हूँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना परमपिता भगवान से करता हूँ। मैं यह भी विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि उनके व्यक्तित्व में अभी भी ऐसी अपार संभावनाएँ छुपी हैं, जिनको अभी आलोकित होना है। मैं पुनीत भावना और हार्दिकता के साथ उनकी दीर्घायु की प्रार्थना माँ सरस्वती से करता हूँ ताकि वे लम्बे समय तक अपनी सशक्त लेखनी से भारतीय समाज व हिन्दी प्रेमियों का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

अंत टिप्पणी

1. *स्मारिका, 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, पृ. 1–2*
2. *वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 513*
3. *डॉ. कमलकिशोर गोयनका, हिन्दी का प्रवासी साहित्य, पृ. 14*
4. *डॉ. कृष्ण कुमार, प्रवासी हिन्दी लेखन की पृष्ठभूमि और उसका स्वरूप, वर्तमान साहित्य, पृ. 69*
5. *स्पाइल (दर्पण), सम्पादक, सुरेशचन्द्र शुक्ल, अंक–3, वर्ष 2015, पृ. 5–6*
6. *गंगा से ग्लोमा तक, सं. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली – 63, पृ. 8*
7. *स्पाइल (दर्पण), सम्पादक–सुरेशचन्द्र शुक्ल, अंक–3, वर्ष 2015, पृ. 9*
8. *वही, पृ. 15*
9. *गंगा से ग्लोमा तक, सं. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक', विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली – 63, पृ. 79*
10. *वही, पृ. 84*
11. *वही, पृ. 92*
12. *वही, पृ. 102*
13. *वही, पृ. 88*
14. *वही, पृ. 28*
15. *वही, पृ. 46*
16. *वही, पृ. 51*
17. *वही, पृ. 51–52*
18. *वही, पृ. 17*
19. *वही, पृ. 67*
20. *वही, पृ. 83*
21. *वही, पृ. 69*
22. *वही, पृ. 18*
23. *वही, पृ. 23*
24. *वही, पृ. 114*